प्रातः क्लास 9/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। एक तो तुम बच्चों को बाप से ज्ञान का वर्सा मिल रहा है। बाप से भी गुण उठाना है और इन चित्र (ल॰ना॰) से भी गुण उठाना है। बाप को कहा जाता है शान्ति का सागर। तो शांति भी धारण करनी चाहिए। शांति के लिए ही बाप समझाते हैं– एक/दो से शांति से बोलो। यह भी गुण उठाया जाता है। ज्ञान का तो गुण उठा ही रहे हो। यह नॉलेज पढ़नी है, जैसे और पढ़ाई होती है। सिर्फ यह विचित्र बाप पढ़ाते हैं। विचित्र आत्माएँ बच्चे पढ़ते हैं। यह है यहाँ की नई खूबी, जिसको और कोई नहीं जानते। कृष्ण जैसे दैवीगुण भी धारण करनी है। बाप ने समझाया है मैं शांति का भी सागर हूँ। तो शांति यहाँ स्थापन करनी है। अशांति खत्म होनी है। अपनी चलन को देखना चाहिए कहाँ तक हम शांत में रहते हैं। बहुत पुरुष लोग होते हैं जो शांति पसंद करते हैं। समझते हैं शांत रहना अच्छा है। शांति का गुण भी बहुत भारी है; परन्तु शांति कैसे स्थापन होगी, शांति का अर्थ क्या है, यह भारतवासी बच्चे नहीं जानते। बाप तो भारतवासियों को ही कहेंगे। बाप आते भी हैं भारत में। अभी तुम समझते हो बरोबर अन्दर में भी शांति ज़रूर होनी चाहिए। ऐसे नहीं, कोई अशांति करे तो खुद को भी अशान्त करना है। नहीं। अशान्त होना यह भी अवगुण है। अवगुण को निकालना है। हरेक से गुण ग्रहण करना है। अवगुण तरफ देखना भी न चाहिए; क्योंकि बाप दादा दोनों शांत रहते हैं, कब बिगड़ते नहीं, रड़ी नहीं मारते। यह भी सीखा है ना। जितना शांत में रहें उतना ही अच्छा है। शान्त से ही याद कर सकते हैं। अशांत वाले याद कर न सके। हरेक से गुण तो ग्रहण करना ही है। दत्तात्रेय आदि का मिसाल भी देते हैं ना। देवताओं जैसे गुणवान तो कोई होते ही नहीं। एक ही विकार मूल है, उनपर तुम विजय पा रहे हो, पाते रहते हो। कर्मइन्द्रियों पर भी विजय पानी है। अवगुणों को छोड़ देना है। देखना भी न है। बोलना भी न है। जिनमें अवगुण हैं उनके पास भी नहीं जाना चाहिए। रहना भी बहुत मीठा, शांत है। थोड़ा ही बोलने से तुम सभी कार्य कर सकते हो। सभी से गुण ग्रहण कर गुणवान बनना है। समझू-सयाने जो होते हैं वह शांत रहना पसन्द करते हैं। कई भक्त लोग ज्ञानियों से भी शांत निर्माणचित होते हैं। बाबा तो अनुभवी है ना। यह जिस लौकिक बाप का बच्चा था, वह टीचर था। बहुत निर्माण, शांत करता था। क्रोध कब होता नहीं था। जैसे साधु लोग होते हैं तो उनकी महिमा की जाती है। भगवान से मिलने लिए पुरुषार्थ करते रहते हैं। काशी में, हरिद्वार में जाकर रहते हैं। बच्चों को बहुत ही शांत, मीठा रहना चाहिए। यहाँ कोई अशान्त रहते हैं तो शांति के निमित्त नहीं बन सकते। अशांत वाले से बात भी नहीं करना चाहिए। दूर रहना चाहिए। फर्क है ना। वह बगुल और वह हंस। हंस सारा दिन मोती चुगते रहते हैं। उठते-बैठते-चलते अपने ज्ञान को सुमिरण करते मोती चुगते रहते हैं। सारा दिन बुद्धि में यही रहना है किसको कैसे समझावें, बाप का परिचय कैसे देवें। बाबा ने समझाया है जो भी बच्चे आते हैं उनसे फॉर्म भराया जाता है। सभी सेन्टर्स पर जब कोई कोर्स लेने चाहते हैं तो उनसे फार्म भराना है। कोर्स नहीं लेता है तो फार्म भराने की दरकार नहीं। फॉर्म भराया ही इसलिए जाता है कि मालूम पड़े कि इनमें क्या-2 है। क्या समझाना है; क्योंकि दुनिया में तो इन बातों को कोई समझते नहीं हैं। इनको सारा मालूम पड़ता है फॉर्म से। बाप से कोई मिलते हैं तो भी फॉर्म भराना होता है। तो मालूम पड़े तो(कि) क्यों मिलते हैं। बाकी तो(जो) समझते ही नहीं, उनसे फॉर्म भराने की दरकार नहीं। कोई भी आते हैं उनको हद के और बेहद के बाप का परिचय देना है; क्योंकि तुमको बेहद के बाप ने ही आकर परिचय दिया है। तो तुम फिर औरों को परिचय देते हो। उनका नाम है शिवबाबा। शिव परमात्माय नमः कहते हैं ना। वह उनको देवताएँ नमः कहेंगे। इनको कहेंगे शिव परमात्माय नमः। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा पाने लिए पवित्र आत्मा तो ज़रूर बनना है। वह है ही पवित्र दुनिया, जिसको सतो॰ दुनिया कहा जाता है। वहाँ जाना है तो बाप कहते हैं मुझे याद करो तो पाप कट जावेंगे। यह तो बहुत ही सहज है। कोई से भी फार्म भराये तुम कोर्स देते हो। एक दिन फार्म

भराओ फिर समझाओ। फिर फॉर्म भराओ तो मालूम पड़ेगा, हमने इनको जो समझाया वह याद रहा वा नहीं। तुम देखेंगे दो दिन के फॉर्म में फर्क ज़रूर होगा। झट तुमको मालूम पड़ जावेगा, क्या समझा है। हमारे समझाने पर विचार किया है वा नहीं। फॉर्म भरने में फर्क पड़ता जावेगा। यह फॉर्म तो सभी के पास होनी चाहिए। बाबा के ख्याल में तो बहुत सेन्टर्स पर बच्चे हैं जो फॉर्म नहीं भराते हैं। बाबा मुरली में डायरैक्शन देते हैं तो बड़े-2 सेन्टर्स को तो झट एक्ट में लानी चाहिए। फॉर्म रखना चाहिए, नहीं तो मालूम कैसे पड़े? खुद भी फील करेंगे कल क्या लिखा था, आज क्या लिखता हूँ। फॉर्म तो बहुत ज़रूरी है। फार्म मँगा सकते हैं। अलग-2 छपावें तो भी हर्जा नहीं है या तो एक ही जगह छपायें, सभी जगह भेज देवें। छपाई के लिए तो हेड है दिल्ली; क्योंकि यह है दूसरों का कल्याण करना, देवी-देवता बनाना। देवी-देवता अक्षर बहुत ही ऊँच है। दैवीगुण धारण करने वाले को देवता कहा जाता है। अभी तुम दैवीगुण धारण कर रहे हो। तो जहाँ प्रदर्शनी वा म्युज़ियम आदि होती है तो वहाँ तो यह फॉर्म आदि बहुत होनी चाहिए, तो मालूम पड़े कैसी अवस्था है। समझकर फिर समझाना पड़ता है। बच्चों को कल्याण तो बहुतों को करना ही है। तो सदैव गुण ही वर्णन करनी है, अवगुण नहीं। तुम गुणवान बनते हो ना। जिनमें गुण होंगे वह दूसरों में भी गुण फूँक सकेंगे। अवगुण वाले कब गुण फूँक न सकें। बच्चे जानते हैं समय कोई बहुत नहीं रखा है। पुरुषार्थ बहुत करना है। बाप ने समझाया है तुम रोज़ मुसाफिरी करते रहते हो, यात्रा करते रहते हो। यह जो गायन है अति–इन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो, यह पिछाड़ी की बात है। अभी तो नम्बरवार हैं। कोई तो अन्दर में खुशी कर उछ(ा)लें मारते रहते हैं। ओ हो! परमपिता परमात्मा हमको मिला है, उनसे हम वर्सा लेते हैं। उनके पास कोई कम्पलेन्ट हो न सके। कोई ने कुछ कहा तो भी सुना-अनसुना कर अपनी मस्ती में मस्त रहना चाहिए। कोई भी बीमारी आदि है तो तुम सिर्फ याद में रहो। यह हिसाब-किताब अभी ही चुक्तू करना है। फिर तो तुम 21 जन्म फूल बनते हो। वहाँ दुख की बात ही नहीं। गाया जाता है खुशी जैसी खुराक नहीं। फिर सुस्ती आदि भी उड़ जाती है। इसमें तो यह है सच्ची खुशी, वह है झूठी। धन मिला, जेवर मिला तो खुशी होगी। यह है बेहद की बात। तुमको तो अथाह खुशी में रहना चाहिए। जानते हो हम 21 जन्मों लिए सदा सुखी रहेंगे। इसी स्मृति में रहो। हम क्या बनते हैं। बाबा कहने से ही सभी दुख दूर हो जाना चाहिए। यह तो 21 जन्मों के लिए खुशी है। अभी बाकी थोड़े दिन हैं। हम जाते हैं अपने सुखधाम। फिर और कुछ भी याद न रहे। यह बाबा अपना अनुभव सुनाते हैं। कितने समाचार आते हैं। खिट-2 चलती है। कब आर्य-समाजियों की, कब सन्यासियों की। बाबा को कोई बात का दुख थोड़े ही होता है। सुना, अच्छा यह भावी। यह तो कुछ भी नहीं है। हम तो कारून के खज़ाने वाले बनते हैं। अपने से बात करने से भी खुशी हो जाती है। बड़ा शांत में रहते हैं। बाप की याद में भी रहते हैं। भल कुछ भी हो जाता है, ख्याल नहीं होता। हम तो अपने पुरुषार्थ में लगे रहते हैं। उनका चेहरा भी खुशी से खिला रहेगा। स्कॉलरशिप आदि मिलती है तो चेहरा कितना हर्षित रहता है। तुम भी पुरुषार्थ कर रहे हो इन ल॰ना॰ जैसा हर्षित रहने लिए। इनमें ज्ञान तो है नहीं। तुमको तो ज्ञान भी है तो खुशी रहनी चाहिए। हर्षित भी होना चाहिए। इन देवताओं से तुम बहुत ऊँच हो। ज्ञान सागर बाप हमको कितना ऊँच ज्ञान देते हैं। अविनाशी ज्ञान रत्नों की लॉटरी मिल रही है, तो कितना खुशी रहनी चाहिए। यह जन्म तुम्हारा हीरे जैसा ग(ा)या जाता है। नॉलेजफुल बाप को ही कहा जाता है, इन देवताओं को नहीं कहा जाता। तुम ब्राह्मण नॉलेजफुल हो। तो तुमको नॉलेज की खुशी रहती है। एक तो बाप मिलने की भी खुशी रहती है। सिवाय तुम्हारे किसको खुशी हो न सके। इन सन्यासियों आदि को अपना कितना नशा है। आगे चल यह सभी फील करेंगे। एक तो उन्हों को शास्त्र आदि पढ़ने की अधिकार ही नहीं। यह तो भक्तिमार्ग है। दुश्मन और दोस्त होते हैं ना। भक्ति है दुश्मन। भक्ति से दुखधाम बन जाता है। तीर्थों आदि पर भक्तिमार्ग का कितना प्रस्ताव है। यह तो दुखधाम है ना। भक्तिमार्ग में कोई सुख नहीं मिलता। भक्तिमार्ग का है आर्टीफिशियल अल्प काल का सुख। उनका तो नाम ही है स्वर्ग। सुखधाम हेविन। वहाँ अपार सुख, यहाँ अपार दुख

है। अभी बच्चों को मालूम पड़ता है रावणराज्य में हम कितना छी-छी बने हैं। आस्ते-2 नीचे उतरते आए हैं। यह है विषय सागर। अभी बाप इस विख के सागर से निकाल तुमको क्षीर सागर में ले जाते हैं। बच्चों को यहाँ बहुत मीठा लगता है। फिर भूल जाने से क्या अवस्था हो जाती है। बाप कितना खुशी का पारा चढ़ाते हैं। इस ज्ञान अमृत का ही गायन है। ज्ञान अमृत का गिलास पीते रहना है। यहाँ तुमको बहुत अच्छा नशा चढ़ता है, फिर बाहर जाने से वह नशा कम हो जाता है। बाबा खुद फील करते हैं। यहाँ फीलिंग बच्चों को आती है। हम अपने घर जाते हैं। हम बाबा के मत पर राजधानी स्थापन कर रहे हैं। हम बड़े वारियर्स हैं। यह सभी बुद्धि में नॉलेज है जिससे तुम इतना ऊँच पद पाते हो। पढ़ाते देखो कौन हैं! बेहद का बाप एकदम बदला देते हैं। तो बच्चों के दिल में कितनी खुशी होनी चाहिए। यह भी दिल में आना है, औरों को भी खुशी देवें। रावण का है श्राप और बाप का मिलता है वर्सा। रावण की श्राप से तुम कितना दुखी-अशांत बने हो। बहुत गोप भी हैं जिनके दिल में होती है सर्विस करने; परन्तु कलश माताओं को मिलता है। शक्ति-दल है ना। वन्देमातरम् गाया हुआ है। साथ में वन्देपितरम् तो है ही; परन्तु नाम माताओं का है। पहले ल॰ फिर ना॰। पहले सीता पीछे राम। यहाँ पहले मेल का नाम फिर फिमेल का नाम लिखते हैं। यह भी खेल है ना। बाप समझाते तो सभी कुछ हैं। भक्तिमार्ग का राज़ भी समझाते हैं। भक्ति में क्या-2 होता है। जब तक ज्ञान नहीं है तो पता थोड़े ही पड़ता है। अभी तुम समझते हो पहले हम तो जैसे अनपढ़, जट थे, गन्द में पड़े थे। अभी कैरेक्टर्स सभी का सुधरता है। तुम्हारा दैवी कैरेक्टर्स बन रहा है। 5 विकारों से आसुरी कैरेक्टर्स होते हैं। कितनी चेंज होती है। तो चेंज में आना चाहिए ना। शरीर छूट जाए तो फिर थोड़े चेंज हो सकेंगे। बाप में ताकत है, कितनी चेंज में लाते हैं। अनुभव में सुनाते हैं हम बहुत कामी, शराबी, कबाबी थे। हमारे में बहुत चेंज हुई है। हम बहुत खुशी रहते हैं। प्रेम के आँसू भी आ जाते हैं। बाप समझाते तो बहुत हैं; परन्तु यह सभी बातें भूल जाते हैं, नहीं तो खुशी का पारा चढ़ा रहे। हम बहुतों का कल्याण करें। मनुष्य बहुत दुखी हैं, उनको रास्ता बतावें। समझाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। गाली भी खानी पड़ती है। पहले से ही आवाज़ है यह सभी भाई-बहन बनाते हैं। अरे, भाई-बहन का संबंध तो अच्छा है ना। तुम आत्माएँ तो भाई-2 हो; परन्तु फिर भी जन्म-जन्मांतर की दृष्टि जो पक्की हुई वह टूटती नहीं है। बाबा के पास तो बहुत पत्र आते हैं। लिखती हैं बाबा हमारे ऊपर (बाप) की कुदृष्टि रहती है, अभी हम इनसे कैसे छूटें। बहुत दुख होता है। बाबा बचाओ, हमको भाई खर(ाब) (करते हैं।) द्रौपदी ने भी पुकारा ना पति के लिए। यहाँ तो भाई, बाप, मामा, चाचा, काका, सभी दुशासन बन जा(ते) हैं। बाप कहते हैं यह कोई नई बात नहीं, कल्प-2 हम यही बातें सुनते हैं। तो बाप समझाते हैं इस छी-छी दुनिया से तुम बच्चों को ही जाना है। गुल-2 बनना है। कितने ज्ञान सुनकर फिर भूल जाते हैं। सारा ज्ञान उड़ जाता है। काम महाशत्रु है ना। काम की आस पूरी न होने से फिर क्रोध में आ जाते हैं। कोई-2 तो खुद जाकर पुलिस में रिपोर्ट करते हैं हमको ऐसे मारते हैं। इसमें महावीरणी चाहिए। कुछ सटका भी खानी पड़ती है। 21 जन्म सुख पाने लिए एक जन्म सटका खाया तो कोई हर्जा थोड़े ही है। रीढ़-बकरियाँ मार खाती हैं। कोई तो फिर छी-छी भी होती रहती हैं। ताकत नहीं। कहाँ बाहर निकल न सकें। बाबा तो बहुत अनुभवी है। इस विकार के पीछे राजाओं ने अपनी राजाई गँवाई है। (मिसाल बताना) काम बहुत खराब है। सभी कहते हैं बाबा यह बहुत कड़ा दुश्मन है। बाप कहते हैं काम को जीतने से ही तुम विश्व के मालिक बनेंगे; परन्तु काम विकार ऐसा कड़ा है जो प्रतिज्ञा करके भी फिर गिर पड़ते हैं। बहुत मुश्किल से कोई सुधरते हैं। इस समय सारी दुनिया के कैरेक्टर्स बिगड़ा हुआ है। पावन दुनिया कब थी, कैसे बनी, किसको भी पता नहीं है। इन्होंने यह राज-भाग कैसे पाया, कब कोई बता न सके। आगे समय ऐसा आवेगा तुम लोग विलायत आदि में भी जावेंगे। वह भी सुनेंगे तो सही ना। पैराडाइज़ कैसे स्थापन होता है, यह पैराडाइज़ कब था, कोई को पता नहीं है। आगे तुम भी नहीं समझते थे कि यह स्वर्ग था। हम स्वर्ग के मालिक थे। अभी तुमको कितना मालूम पड़ गया है। तुम्हारी बुद्धि में है यह

सभी बातें अच्छी रीत हैं। तो अभी तुम्हारी यही लत और तात रहनी चाहिए। और सभी बातें भूल जानी हैं। बापदादा बैठे हैं। कोई भी बात में नाराज़ न होना है। बाप के पास आना चाहिए। बाप सभी दुख दूर करने वाला बैठा है। तुम्हारे तो सभी दुख दूर हो जाते हैं। तुम जानते हो हम ट्रान्सफर हो रहे हैं अपने सुखधाम में। इसकी बहुत खुशी रहती है। लॉटरी तुमको बहुत फर्स्ट क्लास मिलती है। तुमको अपनी सम्भाल आपे ही करनी है। अपना सुधार करना है। तुम्हारी है ही योगबल की बात। बाप ही आकर योगबल सिखलाते हैं। तुम योगबल से विश्व के मालिक बन सकते हो। वह लोग आपस में लड़ते हैं, कितने एक/दो को ताकत दिखाते हैं। समझते हैं हम जीतेंगे। सभी आपस में लड़ेंगे तो ज़रूर। दिन-प्रतिदिन ज़ोर होता जाता है, समझते हैं बस अभी लड़ाई लगी कि लगी। उनके अन्दर में होगा मैं जीतूँगा, मैं पावरफुल हूँ। क्रिश्चियन ही आपस में हैं। उन्हों में ताकत बहुत है। क्रिश्चियन्स के पास ही बॉम्ब्स आदि हैं। इस पर बहुत खर्चा होता है। उन्हों के पास तो ढेर हैं। कहानियाँ भी हैं दो आपस में लड़े और मक्खन बीच में तीसरा खा गया। कृष्ण के मुख में चन्द्रमा दिखाते हैं। बाप कहते हैं यह सारी सृष्टि की राजाई उनके मुख में है। राजधानी है ना बड़ी। विचार करो, कल्प-2 हम राजधानी पाते हैं। बच्चों को बड़ी खुशी अन्दर में रहनी चाहिए। बाप की सर्विस करनी है। ड्रामा हमको ज़रूर करावेगी। मुख में सारे विश्व की बादशाही का मक्खन है। तो कितनी खुशी होनी चाहिए! हम विश्व के मालिक बनते हैं। बाबा ज़रूर हमको बनावेंगे, अगर हम श्रीमत पर चलेंगे तो। नम्बरवार नशा रहता है। अभी तुम हो संगमयुग पर। तुम्हारा मुँह उस तरफ है। श्मशान के दर पर जब जाते हो तो फिर मुँह फिराये उस तरफ करते हैं, लात इस तरफ करते हैं। अभी तुम सभी वानप्रस्थ में जाने वाले हो। फिर नए घर में जाना है। शांतिधाम-सुखधाम को तुम ही जानते हो। तो तुम बच्चों को बहुत ही खुशी में रहना चाहिए। नशा रहना चाहिए नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। फिर उतरता जाता है। यह नशा और कोई नहीं है, यह है सुखधाम जाने का नशा। तुम जानते हो भारत कल क्या था, आज क्या है। हम ही सूर्यवंशी-चंद्रवंशी बने यह खेल है। अभी तुम चले अपने वतन की ओर। शान्तिधाम-सुखधाम तुम्हारा वतन है। यहाँ तुम पराये राज्य में हो। अभी अपना राज्य मिलता है तो उसको ले लेना चाहिए। रोज़ तुमको प्याला मिलता है तो बच्चों को खुशी का पारा चढ़े; परन्तु ऐसे नहीं कि यहाँ नशा चढ़े और बाहर निकलने से ही खत्म हो जाए। एक दिन आवेंगे जो तुम बहुत खुशी में रहेंगे। मिरवा मौत..... मिरवा तो जानवर मिसल ही मरेंगे। तुमको ज्ञान है। हम आत्माएँ भी शरीर छोड़कर जाते हैं अपने घर। फिर लौटेंगे तब तक सभी ठीक ठाक हो जावेगा। बच्चों को सदैव खुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। हम अभी जाते हैं सुखधाम। फिर दुख-बीमारी आदि की बात ही नहीं। छी-छी अक्षर सुनने की बात नहीं रहेगी। अच्छा।

यह है सत्य नर से ना॰ बनने की कथा, जिसको सत्य अमरकथा भी कहते हैं, तीजरी की कथा भी कहते हैं। इन नेत्रों से तो भल देखो; परन्तु तीसरे ज्ञान की नेत्र से अपने शान्तिधाम-सुखधाम को याद करते रहो। ऐसे कब कोई सिखला नहीं सकता। बाप ही आकर कहते हैं बाप को याद करो और वर्से को याद करो। शान्तिधाम और सुखधाम को याद करो। बाकी इन आँखों से जो कुछ देखते हो उनको भूल जाओ। बाप नया घर बनाते हैं तो फिर पुराने से दिल हट जाती है ना। यह भी ऐसे है। अभी बाकी थोड़ा समय है; इसलिए अपने शान्तिधाम-सुखधाम को याद करो। सिखलाने वाले बाप को याद करो तो वहाँ पहुँच जावेंगे। फिर जितना जो याद करेंगे। इस पुरानी दुनिया में पराया राज्य में तो बाकी थोड़ा समय है। यह कोई अपना राज्य थोड़े ही है। यह तो पराया राज्य है। रावण का सारी दुनिया पर राज्य है ना। सिर्फ लंका में नहीं, सारी दुनिया में रावण राज्य है। इसको बेहद का फॉरेन राज्य कहा जाता है। एक-एक मनुष्य में इन 5 भूतों की प्रवेशता है। अच्छा, रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

शिवबाबा याद है?